

1

थक गई आँखें मिली ना सोम से रविवार अबतक  
खूबसूरत सी खबर की खोज में अखबार अबतक ।

तितलियाँ पकड़ी गई, मसली गई हरवार फिर भी  
अनसुनी अर्जी लिए लथपथ खड़ी दरबार अबतक ।

आँधियों को जब तरस आइ नहीं मासूमियत पर  
इसलिए मजदूर का धरती सटा घर—बार अबतक ।

रोज की तकरार से है बेहतर जयघोष कर दो  
क्यों खड़ी है बीच में ये चीन की दीवार अबतक ।

लाल आया ताबुतों में आखरी सिन्दूर लेकर  
मातमी वातावरण में वीर के परिवार अबतक ।

सोचता हूँ कल सुबह खुशियाँ लिए सूरज उगेगा  
पर तबाही को खड़ी है वक्त की तलवार अबतक ।

2

क्या किया जिन्दगी सोचते—सोचते ।  
तोड़ दी बाँसुरी सोचते—सोचते ।

पड़ न जाये कहीं दोस्तों की नजर  
ओढ़ ली ओढ़नी सोचते—सोचते ।

क्या वो जादू चला ख्वाब का देखिए  
खो गया अजनवी सोचते—सोचते ।

हाँफती साँस को क्या शिला मिल गया  
बढ़ गई बेबसी सोचते—सोचते ।

दूरियाँ जब शिकायत की घटने लगी  
बढ़ गई बेरुखी सोचते—सोचते ।

3

आइये यह सजा दीजिए  
मेरी नजरें हटा दीजिए।

मेरे सीने में जो आग है  
मुस्कुरा के हवा दीजिए।

गैर से ना शिकायत करें  
खुद से आके बता दीजिए।

रात कट जायगी याद में  
आप अपना पता दीजिए।

प्यार से नींद आ जाएगी  
कोई नगमा सुना दीजिए।

क्या खता है बता दीजिए।  
और खता का सजा दीजिए।  
सच से पर्दा हटा दीजिए।

By Sudhir Kumar Programmer  
Sultanganj, Bhagalpur